अप्रैल 2006 में प्रकाशित की। ये पुस्तक Prof. Dr. Robert Zydenbos ने विशेषतः जैन धर्म पर लिखी है जो जैन धर्म के विशेषज्ञ हैं। ये पुस्तक फरवरी 2006 में कर्नाटक के वणबेलगोला गाँव में बाहुबली गोमटेश्वर के महा-मस्तकाभिषेक के अवसर को लेकर प्रकाशित की गई थी जहाँ उनकी विशाल प्रतिमा को दूध से नहाया जाता है (http://en.wikipedia.org/wiki/Mahamastakabhisheka) ये मेला हर बारह वर्ष बाद आता है।

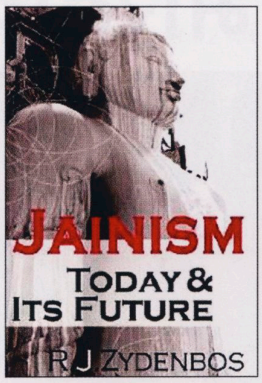


ये पुस्तक उच्च शैक्षिक स्तर की है। ये पुस्तक विद्वानों के लिए तो नहीं है परंतु जो लोग जैन धर्म को निकटता से समझना चाहते हैं, उनके लिए बहुत उपयोगी है।

वे आगे बताती हैं- अब हमारी अगली योजना है Indologie पर एक स्तरीय पत्रिका बनाना जिसमें हम भारत के बारे में रोचक तरीके से निकटता से समझाना चाहते हैं। इस चीज़ की यहाँ बहुत पूछ और ज़रूरत है, लोग भारत को नज़दीक से समझना चाहते हैं। हम इस पत्रिका को जितना हो सके रोचक और सस्ती बनाना चाहते हैं। विश्वविद्यालय से हमें कोई विशेष मदद नहीं मिल रही क्योंकि हमारा विभाग उनके लिए कमाई का साधन नहीं है। भारत सरकार अथवा भारतीय लोग भी हमारे कार्य के प्रति उदासीन हैं। हम ये सब कर रहे हैं क्योंकि हमें भारत से बहुत प्यार है। भारत के बारे में यहाँ के मीडिया में अधिकतर गलत बताया जाता है। यहाँ या तो लोगों के मन में धारणा है कि भारत बहुत आत्मिक देश है, वहाँ सब लोग आलोकित हैं, जबकि हम जानते हैं कि भारतीय बहुत भौतिकवादी भी हैं, वहां जातिप्रथा भी काफ़ी प्रचलित है। दूसरी धारणा है कि भारत बहुत गरीब है, वह अपने आप अपना पोषण नहीं कर सकता। विशेषतः चर्च द्वारा ऐसा प्रचार किया जाता है। जबकि भारत में जर्मनी से अधिक अमीर लोग हैं। हां भारत में सम्पत्ति असमान रूप से बंटी है लेकिन वहां गरीब लोग भी अपने आप में खुश हैं। जहां भारत में बुरी बातें हैं, वहीं बहुत अच्छी बातें भी हैं। हम ये बातें लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं।

भारतीय मीडिया में हमेशा अमरीका और अन्य अंग्रेज़ी बोलने वाले देशों के बारे में ही सूचनाएं होती हैं। विश्व के अन्य देशों का उनके लिए जैसे अस्तित्व है ही नहीं। इससे भारतीयों को लगता है कि विश्व में केवल अमरीका वगैरह ही ढंग के देश हैं। अधिकतर भारतीय काम करने के लिए अमरीका जाना चाहते हैं। जर्मनी उनके लिए रास्ते के पड़ाव जैसा है। लेकिन हमारी संस्कृति भी बहुत अच्छी है। भारतीयों को हमारे बारे में खुले दिल से सोचना चाहिए। भारतीयों के मन में धारणा है कि हम लोग नस्लभेदी हैं,

लेकिन ऐसा नहीं है। बल्कि भारत में नस्लभेद, जातिभेद यहां से अधिक है। वैसे भी अमरीका में अब संतृप्ति हो गई है जबकि हमारे यहां अभी लोगों की ज़रूरत है। हां यहां लोगों को जर्मन सीखनी पड़ती है लेकिन अमरीका जाने के बाद भी उन्हें ढंग से अंग्रेज़ी सीखनी पड़ती है। अधिकतर अंग्रेज़ भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली अंग्रेज़ी समझ नहीं पाते हैं। म्युनिक में रह रहे अधिकतर भारतीय भी इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि उनके शहर के विश्वविद्यालय में तमिल, तेलगू, कन्नड़, संस्कृत, हिन्दी, बंगाली आदि पढ़ाए जाने की सुविधा उपलब्ध है। भारतीय दूतावास से भी उन्हें कोई वित्तीय मदद नहीं मिल पा रही जिससे वो और जी जान से अपना काम कर सकें। ज़रूरत है कि लोग इस तथ्य को पहचानें कि उनकी संस्कृति के प्रचार का इतना बड़ा माध्यम उपलब्ध है, और हर संभव सहायता करें। संस्कृत भाषा में निपुण Richard Holzberger M.A. एक छात्र कार्यसमिति का नेतृत्व कर रहे हैं जो All India Radio के संस्कृत समाचारों का अधय्यन करती है और उनका जर्मन भाषा में अनुवाद करती है। All India Radio के विभिन्न भाषाओं में समाचार mp3 फार्मेट में यहां सुने जा सकते हैं- http://www.newsonair.com/nsd_schedule.asp

**भारत सरकार व भारतीय लोग भी हमारे कार्य के प्रति उदासीन हैं। हम ये कर रहे हैं क्योंकि हमें भारत से बहुत प्यार है। भारत के बारे में यहां के मीडिया में अधिकतर गलत बताया जाता है। यहां लोगों के मन में धारणा है कि भारत बहुत आत्मिक देश है**